साहित्य-रूप

अंतस्थ मनोभाव किंवा पर्यावरणजन्य अनुभूतिक स्फुरण, कखनहु उद्‌गारक रूपमे तँ कखनहु उद्वेलनक रूपमे तँ कखनहु जीवनक कोनहु अविस्मरणीय ओ संवेद्य इतिवृत्तकेँ उद्‌भासित करबा ओ ओकरा लिपिबद्ध कऽ सहृदय पाठक, श्रोता वा प्रेक्षकसँ अनुमोदित होयबाक लालसा मनुष्यक सहजात प्रवृत्ति रहल अछि । सांस्कृतिक ओ मानसिक रूपेँ मनुष्य जेना-जेना प्रबुद्ध होइत गेल, हुनक अभिरुचि, संस्कार ओ आवश्यकताक परिष्कार होइत गेलैक, सामुदायिक ढाँचामे हुनक विश्वास बढ़य लागल तथा अपन अभिव्यक्तिकेँ बहुजन-संप्रेषणक माध्यम बनयबाक लेल विविध आयास करय लगलाह । अभिव्यक्तिक विवक्षित उद्देश्य व्यापक होयबाक संगहि परिमार्जित होइत गेल । ओकर मूल स्वर साहित्य-रसिकक मुखापेक्षी ओ अपन संरक्षक लोकनिक तुष्टिकरण मात्रक निमित्त नहि जनोन्मुख यथार्थक प्रति संवेदनशील होमय लागल तथा इन्द्रियग्राह्य अभिव्यक्ति ओ ज्ञानवर्द्धन दिस सेहो क्रमशः अग्रसर होमय लागल । मनुष्यक इएह परिवेशजन्य अनुभूति ओ स्वतः स्फूर्त उद्गम नैसर्गिक स्फुरणक मर्यादित समष्टिक परिणाम थिक-साहित्य ।

परंपरित रूपेँ साहित्यक अर्थ कहल जाइछ – शब्द ओ अर्थक सहितत्व अर्थात् परस्पर सान्निध्य । एहि दृष्टिएँ सार्थक शब्द मात्रक नाम साहित्य थिक । साहित्यक ई अर्थ अत्यन्त व्यापक अछि तथा एहिमे मनुष्यक समस्त बोधन तथा भावन चेष्टा समाविष्ट भऽ जाइत छैक एवं समस्त ग्रंथसमूह साहित्यक अन्तर्गत आबि जाइत अछि । वस्तुतः साहित्य मनुष्यक भाव एवं विचारक समष्टि रूप थिक ।

मूल रूपमे साहित्य शब्दक प्रयोग शास्त्रक रूपमे होइत छल मुदा कालांतरमे काव्यक रूपमे सेहो एहि शब्दक प्रयोग होमय लागल । भर्तृहरि 'साहित्य, संगीत, कला'क त्रयीमे साहित्यकेँ काव्यक समानार्थक मानल अछि । प्रायः ओही समय भामह **'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'** लिखि एहि प्रयोगक पुष्टि कयलनि । राजशेखर **'शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेन विद्या साहित्य विद्या'** कहिकेँ एहि परिभाषाकेँ आओरो व्यापकता प्रदान कयलनि । आचार्य लोकनिक उपर्युक्त मान्यता देखलासँ एतबा तँ निर्विवाद अछि जे साहित्यमे शब्द तथा अर्थक परस्पर सहभाव विलक्षण एवं आह्लादक होइत अछि ।

भारतीय साहित्य विवेचनामे रसमूलकताक आग्रह अछि तथा ओकरा लोकोत्तर आनन्दक विषय कहल गेल अछि, मुदा समाज, साहित्य तथा साहित्यकारक व्यक्तित्वसँ ओकर अन्तरावलम्बन स्थापित नहि कयल गेल अछि । पश्चिमी साहित्यमे एहि पक्ष पर विचारक एक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि जे प्लेटोसँ कॉडवेल धरि व्यक्त होइत रहल । पाश्चात्य चिन्तन साहित्यकेँ समाजदर्शी बनाओल तथा समष्टिमूलकता देल अछि । वस्तुतः साहित्यक विवेचना मात्र अभिव्यंजनापक्ष, शब्दार्थक सहभाव अथवा आभ्यन्तर रस पक्षकेँ लऽ कऽ नहि कयल जा सकैछ; परञ्च ओकर सामाजिक प्रेरणा तथा सामाजिक उपयोगिता पर सेहो विचार करब आवश्यक भऽ जाइत अछि । इएह कारण थिक जे साहित्य दिनानुदिन समाजोन्मुख भेल जा रहल अछि तथा जीवनक सूक्ष्मातिसूक्ष्म यथार्थ, ज्ञान-विज्ञान ओ मनोरंजनक समन्वित प्रतिफलनक प्रतीकक रूपमे समादृत भऽ गेल अछि । संगहि आइ ई शब्द अंग्रेजीक **'लिटरेचर'** (Literature) शब्दक पर्याय बनि गेल अछि, जेना कानूनक साहित्य, चिकित्साक साहित्य आदि ।

साहित्यिक कृति दृश्य थिक अथवा श्रव्य, कथा थिक वा उपन्यास, नाटक थिक किंवा एकांकी, महाकाव्य थिक वा खंडकाव्य, ओकर शिल्प सरल अछि अथवा सामासिक आदि-आदि विषयक कतेको प्रश्न शिक्षार्थी-अध्यापकक मानस-पटल पर एक संश्लिष्ट प्रश्न जकाँ आबि जाइत छनि । एतय एहि प्रसंग एक स्पष्ट रेखांकन प्रस्तुत कयल जाइछ ।

एहि तथ्यकेँ अन्ठायल नहि जा सकैत अछि जे आधुनिक साहित्यक कतेको साहित्य रूप (खास कऽ गद्यमे विकसित) पाश्चात्य साहित्यक सान्निध्यहिसँ प्रादुर्भूत, पल्लवित ओ पुष्पित भेल अछि । एही कारणेँ साहित्य-रूपक सन्दर्भमे परम्परित धारणाकेँ आइ आओरो विस्तृति भेटलैक अछि तथा नव-नव संकल्पना उद्‌बुद्ध भेल अछि । परम्परित रूपेँ साहित्य किंवा काव्यकेँ **दृश्य, श्रव्य** ओ **चम्पूक** रूपमे सेहो वर्गीकृत कयल जाइत रहल अछि । मुदा आजुक प्रचलित साहित्य-रूप सभकेँ एतय मुख्यतः दू वर्गमे राखल गेल अछि–**गद्य** ओ **पद्य** । गद्यक अन्तर्गत नाटक, एकांकी, रेडियो नाटक, कथा–लघुकथा, उपन्यास, निबंध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र ओ रिपोर्ताजकेँ राखल गेल अछि तँ पद्यक अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य ओ मुक्तककेँ । एहि वर्गीकरणकेँ आओरो बोधगम्य बनयबाक लेल निम्नलिखित तालिका द्रष्टव्य अछि –

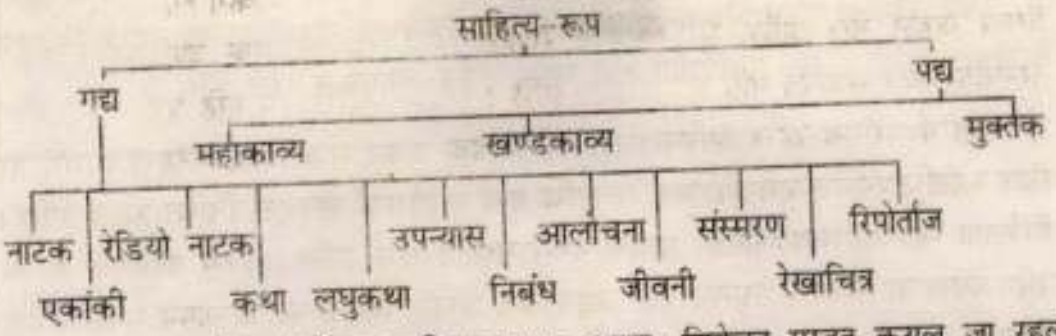

आब उपर्युक्त विभिन्न साहित्य-रूपक क्रमशः विवेचन प्रस्तुत कयल जा रहल अछि ।

नाटक

नाटक, दृश्यकाव्य अथवा रूपकक दसो भेदमे सँ एक प्रधान एवं सर्वांगपूर्ण रूप बनि गेल अछि । नाटकके साहित्यक सर्वोत्तम विधा मानल गेल अछि। तेँ **'काव्येषु नाटकं रम्यम्'**, **'नाटकान्तं काव्यम्'** आदि उक्तिक रूपमे संस्कृतक आचार्य लोकनि द्वारा एकर महत्ता प्रतिपादित कयल जाइत रहल अछि ।

भरतमुनि नाटकक कथावस्तुक विषयमे अपन मत स्पष्ट करैत कहलनि अछि जे देवता, मनुष्य, राजा एवं महात्मा सभक पूर्व वृत्तक अनुकृतिकेँ नाटक कहल जाइछ--'देवतानां मनुष्याणां राज्ञां लोक महात्मनाम् । पूर्व वृत्तानुचरितं नाटकं नाम तद्भवेत् ।।'

अभिनवगुप्त कहैत छथि जे नाटक ओ दृश्यकाव्य थिक जे प्रत्यक्ष, कल्पना एवं अध्यवसायक विषय बनि सत्य एवं असत्यसँ समन्वित विलक्षण रूप धारण कऽ सर्वसाधारणकेँ आनन्दोपलब्धि करबैत अछि ।

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथक अनुसार नाटक पाँच सँ दस अंकक होइत अछि । एकर आधार कोनो प्रसिद्ध घटना वा आख्यान होइत अछि तथा नायक कोनो प्रतापी पुरुष, नीक प्रसिद्ध कुलमे उत्पन्न व्यक्ति वा राजर्षि आदि होइत छथि । शृंगार अथवा वीर रस एहिमे प्रधान होइत अछि तथा अन्य रस अंगभूत रहैछ ।

उपर्युक्त मान्यता सभक आधार पर कहल जा सकैत अछि जे *नाटक, अंकमे विभाजित ओहन कृति थिक जाहिमे वर्णित कथानक किंवा चरित्रक जीवनक घटनावलीक अनुकरण रंगशालामे अभिनेता द्वारा आकृति, हाव-भाव, वेश-भूषा तथा कथोपकथन आदिक द्वारा प्रेक्षकक समक्ष प्रदर्शित कयल जाइछ ।*

स्पष्ट अछि जे एहिमे अंकक अनेकता, जीवनक विविधता, पात्रक बहुलता, चरित्र-चित्रणक विचित्रता, कथा-सूत्रक सुविमर्शता तथा चरमोत्कर्षक व्यापकता रहैत अछि ।

एहि प्रकारेँ नाटक साहित्यक ओहन रूप थिक जकर सफलताक परीक्षण रंगमंच पर होइत अछि । रंगमंच युग-विशेषक जनरुचि तथा परिवेशक अनुकूल निर्मित होइत अछि । तेँ नाटक ओ रंगमंचक स्वरूप प्रत्येक युगमे बदलैत रहैत अछि । जतय आरंभिक नाटक सभमे जीवनक आदर्शकेँ प्रश्रय देल जाइत छल ओतहि बादक नाटक सभमे समसामयिक जीवनक यथार्थक आग्रह बेसी भेटैत अछि । नव-नव तकनीकक प्रादुर्भावसँ रंगमंचक स्वरूपमे सेहो अभूतपूर्व विकास देखबामे अबैत अछि ।

प्राचीन ओ मध्यकालीन त्रैभाषिक नाट्य परम्पराक अवगाहन कऽ आधुनिक नाट्य धाराक प्रवर्तन कयनिहार पं० जीवन झासँ लऽ आधुनिक नाटककार लोकनि एहि साहित्य-रूपकेँ समृद्ध करबामे लागल छथि । एतय ध्यातव्य जे आइ-काल्हि सृजित होमयवला नाट्य कृति सभकेँ नाट्यशास्त्री लोकनिक निर्धारित मानदंड पर राखल जायत तँ बिरले नाटक, नाटक होयबाक ताल ठोकि सकत !

एकांकी

भारतीय साहित्यमे एकांकीक प्रादुर्भाव उपन्यास, आधुनिक लघुकथा आदि साहित्य रूपक सदृश पाश्चात्य साहित्यक प्रभावहि सँ भेल अछि मुदा आइ ई एक स्वतंत्र ओ सशक्त साहित्य रूपमे स्थापित भऽ चुकल अछि ।

एकांकी नाटक साहित्यक ओहन नाट्य-प्रधान रूप थिक जे एक अंकक होइत अछि तथा जाहिमे जीवनक कोनहु एक पक्ष, एक घटना, एक चरित्र, एक कार्य तथा एक भावक कलात्मक व्यंजना कयल जाइत अछि ।

एकांकीक कथाक प्रवाहमे क्षिप्रता होइत अछि । आकस्मिक आरम्भक संग ई अन्तक दिस तीव्र गतिसँ अग्रसर भऽ जाइत छैक । प्राय: एक मुख्य घटना अनेक लघु घटनाक सहयोगसँ क्रमश: विकसित होइत अछि तथा आद्यन्त कुतूहलक सृष्टि होइत रहैत छैक । ओहिमे पात्रक संख्या सीमित रहैत अछि । संतुलित शब्दमे कोनहु सुनिश्चित उद्देश्यक अभिव्यंजना कयल जाइत अछि । ओहिमे बाह्य अथवा अन्त:संघर्ष सेहो रहैत छैक, जे परिस्थिति, वातावरणक अनुसार उद्दीप्त भऽ खाहे तँ कथाक विकासमे सहयोग करैत अछि अथवा कखनहु स्वयं उद्देश्य बनिकेँ अभिव्यक्त होइत अछि । ओहिमे स्थान-कालक एकता

आवश्यक नहि मानल जा सकैछ मुदा विकल्पसँ शिल्प-कौशलक द्वारा स्थान, काल, कार्यक उचित संकलन उपस्थित कयल जा सकैत अछि ।

दृश्य-विधानक दृष्टिएँ एकर दुइ भेद कयल जा सकैत अछि–एक दृश्यक एकांकी तथा अनेक दृश्यक एकांकी । एकांकी खाहे कोनहु प्रकारक हो ओकर क्षेत्र संकुचित होइत अछि । ओहिमे जीवनक एकपक्षता, चरमोत्कर्षक आकस्मिकता, विषयक एकाग्रता, संवेदनक तीव्रता तथा घटनाक अननुमितता रहैत अछि ।

कुमार गंगानन्द सिंह ओ प्रो० हरिमोहन झा प्रभृति प्रतिभाशाली साहित्यकार लोकनि द्वारा प्रवर्तित ई नाट्य-शैली अद्यपर्यन्त सृजित भऽ रहल अछि तथा किछु नाट्य-संस्थाक प्रशंसनीय भूमिकाक कारणे ओकर मंचन सेहो भऽ रहल अछि ।

रेडियो नाटक

रेडियो पर प्रसारित करबाक निमित्त सृजित नाटककेँ रेडियो नाटक कहल जाइछ । ई '**श्रव्य नाटक**' ओ '**ध्वनि नाटक**'क नामे सेहो जानल जाइत अछि ।

रेडियो नाटकक आधार ध्वनि होइछ । ध्वनिक माध्यमे भावाभिव्यक्ति, घटनाक विकासक संग-संग नाटकक समस्त कार्य-व्यापारक संचालन कयल जाइछ । रेडियो नाटकमे ध्वनिक उपयोग तीन रूपमे होइत छैक– भाषा, ध्वनि प्रभाव एवं संगीत । रेडियो नाटकमे भाषाक व्यवहार दू रूपमे होइत अछि– कथोपकथन अथवा वार्तालापक रूपमे तथा नैरेशन किंवा प्रवक्ताक कथनक रूपमे । ध्वनि प्रभावक अभिप्राय अछि बिहाड़ि, मेघ, वर्षा आदिक ध्वनि जकर व्यवहार कऽ संप्रेषणकेँ प्रभावी बनाओल जाइछ । ध्वनि-प्रभाव एवं वाद्य-संगीतक आवश्यकता पात्रक कार्यक लेल उपयुक्त पृष्ठभूमि ओ वातावरण निर्माण, भावाभिव्यंजन, दृश्यान्तर, देश-काल-परिचय आदिक लेल होइत अछि । वस्तुतः एकरा द्वारा नाटकमे जीवंतता ओ प्रभावोत्पादकता अबैत छैक ।

चरित्रकेँ सरलतासँ चिन्हल जयबाक उद्देश्यें रडियो नाटकमे पात्रक संख्या सीमित राखल जाइछ । कथानक सेहो अपेक्षाकृत संक्षिप्त ओ सरल होइत अछि । आध घंटाक रेडियो नाटककेँ आदर्श मानल जाइछ । रंगमंचीय नाटक जकाँ एहि नाट्य स्वरूपमे संकलन त्रयक कोनो प्रतिबंध नहि होइछ । एकहि संग सामाजिक जीवनक विविध यथार्थ सेहो अंकित भऽ सकैत अछि तथा अंतस्थ उद्वेलित द्वन्द्व सेहो । दृश्यान्तर अथवा दृश्य-परिवर्तन सेहो रेडियो नाटकक लेल बेसी सुगम अछि । वाद्य-संगीत, ध्वनि प्रभाव अथवा निःशब्दताक

द्वारा बड़ सुगमतासँ दृश्यान्तर सूचित कऽ देल जाइत छैक । एतबे नहि रेडियो नाटकमे ओहनो दृश्यकेँ सजीव कयल जा सकैत अछि जे रंगमंच पर दृश्य करब असम्भव जकाँ अछि ।

शिल्पक दृष्टिसँ रेडियो नाटकक मुख्य भेद अछि– रेडियो रूपक, रेडियो रूपान्तर, रेडियो फैण्टेसी, मोनोलॉग अथवा स्वगत नाट्य, संगीत रूपक तथा झलकी ।

कुमार गंगानन्द सिंहक एकांकी 'जीवन संघर्ष' क रेडियो रूपान्तरणसँ उद्‌भूत ओ उत्प्रेरित ई नाट्य-प्रयोग यद्यपि आइ धरि गतिशील अछि मुदा दूरदर्शनक सर्वव्यापकताक कारणे जन-जन धरि अपन सामीप्य बनयबामे ई नाट्य-शैली आब ओतबा समर्थ नहि रहि गेल अछि ।

कथा

'कथ्' धातुसँ व्युत्पन्न कथा शब्दक साधारण अर्थ होइछ–'ओ जे कहल जाय' । कथाक विशिष्ट अर्थ होइछ कोनहु एहन कथित घटना वा जीवनक मार्मिक प्रसंगक कहब, वर्णन करब, जकर निश्चित परिणाम हो । एतय ध्यातव्य जे घटनाक वर्णनमे कालानुक्रम अनिवार्य अछि । खाहे घटना लोकसँ सम्बन्धित हो अथवा अन्य जीवधारीसँ–घटना एवं परिस्थिति सभक निश्चित आदि एवं अंतसँ युक्त वर्णन कथा कहबैत अछि ।

ओना तँ साहित्य ओ काव्य समानार्थी शब्द थिक तथा काव्यक पद्यबद्ध होयब अनिवार्य नहि कहल गेल अछि तथापि सामान्य रूपेँ पद्यबद्ध कथाकेँ कथाकाव्य तथा गद्यमे रचित कथाकेँ कथा-साहित्य–**लघुकथा**, **उपन्यास** आदि कहल जाइछ ।

मैथिलीमे एहि साहित्यरूपक लेल कतहु कथा तँ कतहु लघुकथा तँ कतहु गल्प शब्दक प्रयोग समीक्षक किंवा रचनाकार लोकनिक द्वारा कयल जाइत अछि । एहिसँ सामान्य पाठकक मस्तिष्कमे भ्रान्ति उत्पन्न होयब स्वाभाविक । प्रबुद्ध समीक्षक प्रो० रमानाथ झा एहि साहित्य रूपकेँ 'गप्प' क नामे सेहो अभिहित कयलनि अछि । यद्यपि गप्प, गल्प, कहानी, खिस्सा आदि शब्द समानार्थी जकाँ अछि तथापि परवर्ती इतिहासकार वा साहित्यकार लोकनिमे एहि साहित्य रूपक नामक प्रसंग मतैक्य नहि भऽ पाओल, भनहि ई विवशता जतयसँ उद्‌भूत भेल हो । यद्यपि एहि साहित्य-रूपकेँ व्यापक रूपेँ कथाक रूपमे अभिहित कयल गेल अछि मुदा बंगलामे गल्प, हिन्दीमे कहानी, अंग्रेजीमे शार्ट स्टोरी आदिक रूपमे जे साहित्य रूप प्रचलित अछि तकरा '**लघुकथा**' क रूपमे प्रतिष्ठित करब उचित होयत ।

कारण एहि विधाक मूल उत्प्रेरक शार्ट स्टोरी क एहिसँ समीचीन पर्याय दोसर नहि बनि सकैत अछि ।

वस्तुतः मैथिली साहित्यमे कथाक विकास दुइ रूपमे दृष्टिगोचर होइछ । पहिल, आरम्भिक चरणमे संस्कृत अथवा अन्य परम्परित स्रोतसँ गृहीत कथ्यसँ समन्वित आख्यायिका शैलीक कथा किंवा अन्य भाषासँ अनूदित कथा-साहित्य । दोसर जे शैली प्रो० हरिमोहन झा प्रभृति नैसर्गिक प्रतिभासम्पन्न कथाकार द्वारा सृजित कथाकृतिक माध्यमे प्रादुर्भूत भेल जाहिमे शैली, शिल्प, ओ प्रस्तुतीकरणमे तँ स्पष्ट वैषम्य परिलक्षित होइतहि अछि विषय, उपस्थापन एवं प्रतिपाद्यमे सेहो एक वस्तुनिष्ठता भेटैछ । स्पष्ट रूपेँ ई कथा कृति सब परम्परित शैलीसँ भिन्न रूपमे विकसित भेल अछि तेँ एहि दुनू साहित्य-रूपकेँ दू भिन्न कोटिमे वर्गीकृत कयल जयबाक चाही ।

लघुकथा

लघुकथाक अर्थ भेल–छोट कथा । यद्यपि संस्कृत साहित्यमे आख्यायिका आदिक रूपमे कथाक प्रचलन पूर्वहि सँ छल मुदा लघुकथाक रूपमे प्रचलित ई साहित्य रूप अंग्रेजीक 'शार्ट स्टोरी'क प्रभावेँ बंगलामे 'गल्प'क रूपमे आयल तदनंतर अन्य आधुनिक साहित्यमे प्रचलित भेल । एहि साहित्य रूपक रचना-संस्कारक प्रेरक मोपासाँ, चेखोव, टॉल्सटाय सदृश कथाकार रहलाह अछि ने कि कालिदास ओ विद्यापति ।

लघुकथा साहित्यक अत्यन्त लोकप्रिय विधा थिक । ने मात्र एकर कथानक संक्षिप्त होइत अछि परञ्च एकर घटना-प्रसंग, दृश्य, पात्र आओर ओकर चरित्र-चित्रण सेहो सीमिते जकाँ रहैत छैक । तथापि एहिमे सीमित मुदा जीवनक एक सुसंघटित तथा अपनामे परिपूर्ण चित्र उपस्थित कयल जाइत अछि । एहिमे व्यापक मानवीय सत्यक अन्वेषण ओ उद्घाटन होइत अछि, मात्र तथ्यपरक अभिधामूलक सत्यक नहि ।

लघुकथा साहित्यक सभसँ स्वाभाविक एवं अत्यधिक स्वच्छन्द रूप थिक । एहि रूपक अपेक्षाकृत अल्प कालहिमे एतबा सशक्त विकास भेल अछि तथा आकार-प्रकारक विविधतामे ओ एतबा समृद्ध भऽ गेल अछि जे ओकरा आब निश्चित परिधिमे बान्हब कठिन अछि ।

विषयक दृष्टिसँ लघुकथा अनेक प्रकारक भऽ सकैत अछि–ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक, साहसिक, रोमानी आदि ।

उपन्यास

गद्यमे रचित दीर्घ कलेवरक ओहन कल्पित कथात्मक साहित्य-रूप, जाहिमे बहुत पात्र हो तथा जीवनक विविध पक्षक चित्रण हो, कें उपन्यास कहल जाइछ । दोसर शब्दमे, ई वास्तविक जीवनक काल्पनिक दीर्घ कथा थिक ।

ओना तँ उपन्यास शब्दक प्रयोग प्राचीन संस्कृत साहित्यमे सेहो भेल अछि मुदा आधुनिक युगमे जाहि साहित्य रूपक लेल एहि शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि, से आधुनिक युगक उपज अछि तथा अंग्रेजीक 'नॉवेल' शब्दक पर्यायक रूपमे रूढ़ भऽ गेल अछि । वस्तुतः पश्चिममे एकर जन्म पुनर्जागरण युगमे भेल । औद्योगिक क्रांतिक फलस्वरूप निरन्तर वर्तमान जीवनक जटिलता तथा मानसिक ओ भौतिक स्तर पर घटित होमयवाला व्यष्टि एवं समष्टिक जीवन-संघर्षक चित्रणसँ ओतुका उपन्यास यथार्थक रंगसँ अनुरंजित होमय लागल । उन्नैसम शताब्दीक मध्यमे बँगला साहित्यक माध्यमे अन्य भारतीय साहित्यमे ई साहित्य रूप प्रतिष्ठित भेल ।

प्रेमचंद उपन्यासकें मानव जीवनक सजीव चित्र मात्र मानैत छथि । मानव-चरित्र पर प्रकाश देब तथा ओकर रहस्यकें उद्घाटित करब उपन्यासक मूल तत्त्व मानैत छथि । 'दी न्यू इंगलिश डिक्शनरी'क अनुसार गद्यमे लिखल गेल पैघ आकारक ओहि कल्पित कथाकें नॉवेल कहल जाइछ जाहिमे यथार्थ जीवनक प्रतिनिधित्व कथनिहार पात्र एवं कार्य-व्यापार, कथानकक अन्तर्गत चित्रित रहैत अछि । प्रो० रमानाथ झा उपन्यासकें मानव-जीवनक एक गोट व्यापक ओ समयसापेक्ष चित्र मानैत छथि । उपन्यासक घटना ओ परिस्थितिक चक्रकें ओ जटिल एवं सघन मानैत छथि । डॉ० अमरेश पाठक लिखने छथि- " उपन्यास आधुनिक युगक महाकाव्य थिक । एहिमे मानव जीवन तथा मानव चरित्रक चित्रण उपस्थित कयल जाइत अछि । ओ मनुष्यक जीवन एवं चरित्रक व्याख्या करैत अछि तथा ओकर उद्घाटन करैत अछि ।"

एहि प्रकारें देखबामे अबैत अछि जे एहि प्रसंग प्रायः सभ मान्यता *उपन्यासकें ओहन कल्पना प्रसूत कृति मानल अछि जाहिमे मानव-जीवनक प्रतिनिधित्व हो, घटनाक्रम शृंखलाबद्ध हो तथा यथार्थक संस्पर्श हो ।*

उपन्यासमे चित्रित जीवन तथा प्रतिपादित विषयक अनुसार ओकर वर्गीकरण समीक्षक लोकनि एहि रूपें कयल अछि– (1) सामाजिक : सामाजिक-आर्थिक ; आर्थिक

राजनीतिक ; (2) साहसिक : जासूसी रहस्यपूर्ण ; रोमांचकारी-अपराधमूलक ; (3) ऐतिहासिक-पौराणिक (4) जीवनीमूलक-आत्मकथात्मक ; (5) रोमानी-प्रेमाख्यानात्मक। शैलीक दृष्टिसँ प्रमुख प्रचलित प्रकारक उल्लेख एहि रूपेँ कयल गेल अछि (क) समस्यामूलक अथवा समस्या-प्रधान ; (ख) आंचलिक ; (ग) महाकाव्यात्मक ; (घ) लोकवादी वा जनवादी ; (ङ) पत्रशैलीमे रचित आदि।

मैथिलीमे उपन्यासक उत्पत्ति जनार्दन झा 'जनसीदन'सँ मानल जाय किंवा प्रो० हरिमोहन झासँ, ई साहित्य-रूप भनहि लघुकथासँ क्षीण मुदा एखनहु धरि अपन जीवंत अस्तित्वक बोध करा रहल अछि।

निबंध

ओना तँ निबंधकेँ एक निश्चित परिभाषामे बान्हब कठिन अछि तथापि स्थूल रूपेँ कहल जा सकैछ जे *कोनहु विषय पर लघु अथवा दीर्घ गद्यात्मक स्वरूपमे अभिव्यक्त स्वानुभूतिक विचारपूर्ण साहित्यिक ओ रोचक गुंफनकेँ निबंध कहल जायत।*

वस्तुतः निबंध एक गद्य रूप थिक जे सामान्यतः अंग्रेजीक 'ऐस्से' क पर्यायक रूपमे प्रयुक्त होइत अछि जकर शाब्दिक अर्थ अछि– प्रयत्न, प्रयोग अथवा परीक्षण करब। निबन्धक स्वरूपक संदर्भमे पाश्चात्य विद्वान् लोकनिमे मतैक्य नहि छनि तथापि हुनका अनुसार ई आत्मा एवं स्वानुभूतिक अनौपचारिक अभिव्यक्ति सेहो भऽ सकैत अछि तथा कोनहु विषयक शास्त्रीय, वैज्ञानिक तथा सुव्यवस्थित प्रतिपादन सेहो। ओना निबंध -लेखनक शैली आत्मपरक होयबाक चाही– निर्वैयक्तिक वा वस्तुमुखी नहि, एहि विषयमे प्रायः सभ एकमत रहलाह अछि।

आधुनिक भारतीय भाषा सभमे निबंधक अर्थ कहल गेल अछि– बान्हब, सुसंबद्ध अथवा क्रमबद्ध करब। मुदा निबन्ध अपन शाब्दिक अर्थक विपरीत बन्धनहीन अछि।

निबंधक लक्षण सभमे स्वच्छन्दता, सरलता तथा आडम्बरहीनताक संग लेखकक वैयक्तिक आत्मनिष्ठ दृष्टिकोणक उल्लेख सेहो कयल जाइत अछि। निबंध लेखकक आत्मनिष्ठ वैयक्तिकतासँ पूर्णतः निरपेक्ष नहि भऽ सकैत अछि। ओकर मात्रामे न्यूनता भऽ सकैत अछि मुदा ओकर सर्वथा अभाव हो से संभव नहि अछि।

निबंध जीवन एवं जगतक कोनहु प्रकारक मूर्त-अमूर्त विषयसँ लऽ विशुद्ध कल्पनापर

आधारित लोकोत्तर विषय पर सेहो लिखल जा सकैत अछि । निबंध, लेखकक वैचारिक प्रौढ़ता, अनुभवशीलता, संवेदनशीलता तथा मर्मज्ञताक परिचय दैत अछि, मुदा ओ एक विशेष मनोदशामे लिखल जाइत अछि तेँ ओहिमे परिपूर्णता स्वभावतः नहि होइछ । मुदा एतबा सत्य जे निबंधक निर्णायक ओ नियामक स्वयं निबंधकार होइत छथि ।

आधुनिक युगकेँ गद्यक युग कहल जाइछ तेँ निबंधक महत्त्व अत्यधिक भऽ गेल अछि । एकर माध्यमसँ गद्यक शैलीमे निखार तथा विकासक अनन्त संभावना छैक ।

साहित्य रूपक दृष्टिसँ निबंधक जन्म अंग्रेजी साहित्यक सम्पर्क, राष्ट्रीयताक भावना, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य, आधुनिक गद्यक अभ्युदय, मुद्रण-कलाक प्रचलन, समाचार-पत्रक प्रकाशन तथा ओकरा माध्यमे लेखक तथा पाठकमे आत्मीय संबंधक स्थापना आदिसँ भेल ।

निबंध विषय एवं शैलीक प्रकारक दृष्टिसँ मर्यादित नहि अछि । ओ जीवन तथा जगतक कोनहु मूर्त-अमूर्त विषयसँ लऽ विशुद्ध कल्पना पर आधारित लोकोत्तर विषय सभ पर लिखल जा सकैत अछि । व्यक्ति-तत्त्वक प्रमुखताक आधार पर निबंधक दू रूप भऽ सकैत अछि : व्यक्ति-प्रधान तथा विषय-प्रधान । शैलीक दृष्टिसँ सेहो निबंध अनेक प्रकारक भऽ सकैछ, जेना, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, चिंतनात्मक, भावनात्मक, विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, चित्रात्मक आदि । साहित्यिक मूल्यांकनक दृष्टिसँ आलोचनात्मक निबंधक विशेष उपयोगिता अछि । आइ-काल्हि पत्र-पत्रिका सभक संपादकीय, ओहिमे प्रकाशित होमयवाला पुस्तक समीक्षा, रेखाचित्र, भेंटवार्ता, रिपोर्ताज आदिकेँ सेहो निबंधक अन्तर्गतहि मानल जाय लागल अछि ।

बीसम शताब्दीक शैशवहिमे अभिव्यक्तिक प्रकटीकरणक आकुलता, देशभक्ति, मातृभाषानुराग आदिक प्रवृत्तिक कारणे मैथिली साहित्यक लेखक-चिन्तक-गवेषक लोकनि एहि साहित्य-रूपकेँ पुष्ट करैत रहलाह अछि ।

आलोचना

आलोचना शब्द 'लोच्' धातुसँ बनल अछि जकर अर्थ अछि– 'देखब' । तेँ कोनहु *वस्तु वा कृतिक गुण-दोषक सम्यक् विचार, विवेचन किंवा ओकर मूल्यांकन आदि करब आलोचना थिक* । एकर पर्यायक रूपमे 'समीक्षा' शब्द सेहो व्यवहृत होइत अछि ।

भारतवर्षमे राजशेखर अपन 'काव्यमीमांसा' मे आलोचनाक सूत्रपात कयलनि तथा

औचित्यवादी लोकनि ओकरा व्यावहारिक रूप प्रदान कयलनि । पाश्चात्य देशमे साहित्यमे निहित तथ्य औ ओकर सौन्दर्यकेँ जानब तथा समाजकेँ ओकर ज्ञान करायब, आलोचनाक उद्देश्य मानल गेल अछि ।

डॉ० श्यामसुंदर दासक मान्यता छनि जे जँ हम साहित्यकेँ जीवनक व्याख्या मानी, तँ आलोचनाकेँ ओहि व्याख्याक व्याख्या मानय पड़त ।

प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे "समीक्षा औ साधु तात्त्विक प्रक्रिया थिक जाहिमे लोक कोनहु दर्शनीय वस्तुकेँ देखबाक इच्छा करए, देखए औ देखिकेँ ओहिमे जे द्रष्टव्य होइक तकरा दोसराकेँ देखएबाक इच्छा करए, देखाबए ।"

वस्तुतः आलोचना साहित्यकार औ पाठकक मध्यक सेतु थिक । आलोचनाक मूल उद्देश्य होइछ साहित्यिक कृतिक प्रत्येक दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन तथा ओकरा पाठकक सम्मुख प्रस्तुत करब तथा हुनक रुचि परिष्कृत कऽ साहित्यिक गतिविधि निर्धारित करब ।

आधुनिक युगमे साहित्यक विविध रूपक रचना भऽ रहल अछि । ओकर प्रतिक्रिया आलोचनाक रूपमे मुखरित होइत अछि । प्रत्येक रचनामे ओकर रचयिताक कोनो ध्येय निहित रहैत छैक । एहि सम्बन्धमे लेखक, पाठक तथा आलोचकक दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न भऽ सकैत अछि । आलोचक अपन आलोचना द्वारा लेखकक एक तरहेँ पुनः संस्कार करैत छथि ।

आलोचनाक कार्य सम्पन्न करबाक लेल आलोचकमे संवेदनशीलता, साहस, अन्तर्दृष्टि, अतीतक समस्यासँ परिचिति, सौन्दर्यानुभूतिक शक्ति, अध्ययन एवं मननशीलता, सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण, साहित्यकारक कृतिक संग तादात्म्य स्थापित करब आदि गुणक समन्वय रहब साहित्यशास्त्री लोकनि द्वारा अपेक्षित मानल गेल अछि ।

मैथिलीक आलोचना साहित्य अत्यंत समृद्ध रहल अछि । चन्दा झा, म० म० परमेश्वर झा सँ लऽ प्रो० रमानाथ झा धरि तथा एम्हरुका नव नव आलोचक लोकनि योग्यतानुसार अथवा दृष्टिकोणसँ मैथिली साहित्यकेँ पुष्ट करैत रहलाह अछि ।

जीवनी

कोनहु व्यक्तिविशेषक जीवनक घटनावलीक विवरण अथवा जीवन-वृत्तान्तकेँ चित्रित करब जीवनी थिक । जीवनीकेँ जीवन-चरित्र किंवा जीवन-चरित सेहो कहल जाइत अछि ।

जीवनीक पर्यायक रूपमे अंग्रेजीमे '**बायोग्राफी**' (Biography) वा '**लाइफ स्केच**' (Life Sketch) शब्द सेहो कहल जाइत अछि ।

जीवनीमे कोनहु व्यक्तिक जीवनक स्थूल बाह्य घटनावलीक विवरण तँ रहितहि अछि, चरित नायकक आभ्यंतरिक विशेषता सेहो उद्‌भासित भऽ जाइत छैक । कहबाक अभिप्राय जे जीवनीमे व्यक्तिक जीवनक आन्तरिक ओ बाह्य दुनू आयामक घटनाक्रमक वर्णन रहैत छैक । जीवनीमे व्यक्तिक सम्पूर्ण जीवनक कार्य-व्यापारक विकासक्रम सेहो वर्णित रहि सकैत अछि तथा जीवनक आंशिक पक्षक चर्च सेहो । यथा, कोनहु व्यक्तिक जीवन-कालहिमे लिखल जायवला जीवनचरित्रमे हुनक सम्पूर्ण जीवनक इतिवृत्त देब सम्भव नहि होइछ । एही कारणेँ जीवनी साहित्यक एक पार्श्व संस्मरणकेँ मानल जा सकैत अछि तँ दोसर पार्श्व ओहि जीवनीकेँ, जाहिमे जन्मसँ मृत्यु पर्यन्तक इतिहास हो ।

जीवनी लेखकसँ अपेक्षा कयल जाइछ जे ओ चरितनायकक जीवन सम्बन्धी सम्पूर्ण तथ्यक अन्वेषण ओ संकलन कऽ घटनावलीकेँ क्रममे तथा निरपेक्ष भावसँ प्रस्तुत करथि । प्रारम्भहिमे चरित नायकक महिमामंडन करय लागब अतिशयोक्ति मानल जायत । नायकक चरित्रक निर्माण ओ विकास नैसर्गिक रूपेँ क्रमशः प्रस्फुटित होयबाक चाही । जीवनी लेखककेँ नायकक प्रति राग-द्वेष अथवा श्रद्धा भावसँ मुक्त भऽ निष्पक्ष ओ प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करबाक चाही ।

मैथिलीमे जीवनी साहित्य प्रचुर रूप ओ परिमाणमे विद्यमान अछि । आधुनिक साहित्यिक प्रयाणक आरम्भहिसँ मिथिलाञ्चलीय विभूति लोकनिक जीवन-वृत्तांत पर रचना दिस लेखक लोकनि साकांक्ष भऽ गेलाह ।

संस्मरण

स्थूल रूपेँ स्मृति (स्मरण) क आधार पर कोनहु व्यक्ति, विषय अथवा घटनाक सम्बन्धमे लिखित तथ्यक रोचक गुंफनकेँ संस्मरण कहल जा सकैत अछि ।

व्यापक रूपसँ संस्मरण आत्मचरितक अन्तर्गतहि समाहित भऽ जाइत अछि । मुदा एहि दुनूक दृष्टिकोणमे मौलिक अन्तर अछि । आत्मचरितक कथाक नायक लेखक स्वयं होइत छथि तेँ समसामयिक सामाजिक अथवा ऐतिहासिक घटना एवं परिस्थितिक ओहने रूप ओहिमे वर्णित भऽ पबैत अछि जे हुनक जीवन-क्रम ओ जीवन-दर्शनकेँ प्रभावित करैत रहल अछि । संभव अछि जे जीवनक किछु छोट-छोट सन्दर्भ उपेक्षित रहि जाय । मुदा संस्मरण लेखकक व्यक्तिगत अनुभूति, संवेदनशीलता ओ वर्णन-चातुर्य तँ रचनाकेँ अवश्ये

प्रभावित करैत अछि मुदा अन्वेषित आधार-सामग्री (Data) कें यथातथ्य प्रतिपादित करबाक ललक हुनकामे विद्यमान रहैत छनि । वस्तुतः शैलीक दृष्टिएँ संस्मरण-सर्जक निबन्धकारक निकट रहैत छथि । संस्मरणमे विवरणात्मकता बेसी होइत अछि । कल्पना-तत्त्व कम इतिहास-तत्त्व बेसी रहैत अछि ।

संस्मरण लेखक जँ अपना सम्बन्धमे लिखथि तँ हुनक रचना आत्मकथाक निकट रहैत अछि तथा '**रेमिनिसेंस**' (Reminiscence) कहबैत अछि मुदा कोनहु अन्य व्यक्ति अथवा विषयक प्रसंगमे लिखथि तँ जीवनीक निकट जे **मेमोयर** (Memoir) कहल जाइछ अछि । यात्रा-साहित्यकें सेहो एक प्रकारें संस्मरण-साहित्ये कहल जायत ।

मैथिलीमे संस्मरण-लेखन पाश्चात्य साहित्यक सान्निध्यसँ आधुनिक कालमे प्रचलित भेल अछि ।

रेखाचित्र

रेखाचित्र कथा जकाँ रचनाकारक कल्पनासँ उद्भूत एक नवीनतम गद्यात्मक साहित्य रूप थिक जाहिमे कमसँ कम शब्दमे कलात्मक रीतिएँ कोनहु व्यक्ति, वस्तु, दृश्य आदिक भावपूर्ण ओ जीवंत चित्रांकन कऽ देल जाइत अछि जाहिसँ ओ अभिव्यक्ति साकार भऽ उठैत अछि । रचनाकारक अभिव्यक्तिक माध्यम शब्द होइछ रेखा नहि । तें एकरा '**शब्दचित्र**' सेहो कहल जाइछ । रेखाचित्र, चित्रकलासँ गृहीत अंग्रेजी शब्द 'स्केच' (sketch) क पर्याय बुझल जाइत अछि ।

व्यक्ति अथवा पर्यावरणक कोनहु प्रसंगक मूर्तिमान् स्वरूप उपस्थापित कऽ देब कोनहु उत्तम काव्यक विशेषता होइछ । एहि दृष्टिएँ रेखाचित्र साहित्य- रसिककें बेसी आह्लादित करैत छनि कारण एकरा माध्यमे समयाभावहुमे ओहिमे निहित सूक्ष्म सौन्दर्यक प्रतीति भऽ जाइत छैक । रेखाचित्र दृश्यगत सौन्दर्य मात्रहिसँ सम्बन्धित नहि होइछ अपितु सूक्ष्म मानसिक ऊहापोह ओ अन्तर्द्वन्द्वक सूत्र सेहो एहिमे भेटि जाइत अछि ।

रेखाचित्रक संक्षिप्त ओ जीवंत होयब आवश्यक होइछ कारण सूक्ष्म वर्णनहिसँ रेखाचित्र मूर्त भऽ सकैत अछि । वस्तुतः रेखाचित्र व्यक्ति, वस्तु, घटना आदिक एक निश्चित दृष्टि बिन्दुसँ प्रस्तुत कयल गेल प्रतिबिम्ब अछि जाहिमे विवरणक अल्पताक संग-संग तीव्रता ओ संवेदनशीलता विद्यमान रहैत छैक । एहिमे व्यक्ति वा प्रसंगक मात्र एक पक्ष उद्भासित कयल जाइछ जाहिसँ ओ सिनेमाक क्लोज-अप जकाँ भास्वर भऽ

उठैत छैक । एहि दृष्टिएँ व्यंग्य चित्र ओ रेखाचित्रक कला समाने जकाँ बुझि पड़त । दुनूक दृष्टिमे सूक्ष्मता एवं कमसँ कम स्थानमे बेसीसँ बेसी अभिव्यक्त करबाक तत्परता परिलक्षित होइछ ।

रेखाचित्रक सामीप्य आधुनिक कथासँ सेहो अछि – दुनूक रूपरेखा संक्षिप्त रहैत अछि, दुनूमे सूक्ष्मदर्शिता अन्तर्निहित रहैत छैक । वस्तुतः विधामूलक एही साम्यक कारणे कतेको कथाकेँ रेखाचित्र तथा कतेको रेखाचित्रकेँ कथाक संज्ञा प्राप्त भऽ जाइत छैक । मुदा दुनूक वैषम्यक प्रसंग आलोचक लोकनिक धारणा छनि जे रेखाचित्रमे कथाक सारगर्भिता ओ कथात्मकताक अभाव रहैत छैक ।

व्यक्तिक जीवन पर आधारित रेखाचित्रकेँ जीवनी नहि कहि सकैत छी कारण जीवन चरितक लेल यथातथ्य चित्रण अपेक्षित रहैत अछि संगहि जीवनक सामान्य एवं महत्त्वपूर्ण सभ प्रकारक घटनावलीक चित्रण अपेक्षित रहैत अछि मुदा रेखाचित्रकार गनल-गुथल रेखा, सीमित महत्त्वपूर्ण घटनाक उपयोग कऽ अपन व्यक्तिगत सृजन-कौशल ओ काल्पनिक प्रखरता द्वारा विविध चित्र उपस्थापित करैत छथि ।

मैथिलीमे ई साहित्य रूप एखनहु धरि ओतबा विकसित नहि भेल अछि ।

रिपोर्ताज

'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषाक शब्द थिक तथा अंग्रेजीक शब्द 'रिपोर्ट' सँ एकर घनिष्ठ सम्बन्ध छैक, जकर अर्थ अछि कोनहु विशिष्ट घटना वा गतिविधिक व्यक्तिपरक सूचनांकन। रिपोर्ट सामान्यतः समाचार पत्रक लेल लिखल जाइत अछि तथा ओहिमे विशुद्ध साहित्यिकता नहि होइछ । वस्तुतः *रिपोर्टक कलात्मक एवं साहित्यिक रूपहिकेँ रिपोर्ताज कहल जाइछ।*

वस्तुगत तथ्यकेँ रेखाचित्रक शैलीमे प्रभावोत्पादक ढंगसँ अंकित कऽ देबामे रिपोर्ताजक सफलता अछि । प्रत्यक्षदर्शी ओ प्रत्यक्षश्रव्य घटनावली पर रिपोर्ताज लिखल जा सकैत अछि, कल्पनाक आधार पर नहि । मुदा तथ्यक वर्णन मात्रसँ रिपोर्ताज नहि बनैत अछि, रिपोर्ट भनहि बनि जाय । घटना-प्रधान होयबाक संगहि रिपोर्ताजकेँ कथातत्त्वसँ सेहो युक्त होयबाक चाही । रिपोर्ताज लेखककेँ पत्रकार तथा साहित्यकार दुनूक भूमिकाक निर्वाह करय पड़ैत छनि । एतबे नहि रिपोर्ताज लेखकसँ अपेक्षा कयल जाइछ जे ओ जन-साधारणक जीवनक यथार्थसँ परिचिति राखय । प्राकृतिक आपदा जेना बाढ़ि, अकाल, महामारी तथा उत्सव, मेला आदि सुख-दुखक क्षणमे जनताक निकटसँ अवलोकन करय ।

तखने ओ अखबारी रिपोर्टर तथा साहित्यिक रचनाकारक हैसियतसँ जन-जीवनक प्रभावोत्पादक विवरण दऽ सकत ।

मैथिलीमे एहि प्रकारक साहित्यक परिमाण बेसी नहि अछि । संगहि एकरा सुनिश्चित साहित्य-रूपक प्रतिष्ठा सेहो सर्वमान्य नहि भेल छैक ।

महाकाव्य

'महत् काव्यम्-महाकाव्यम्' । महाकाव्य दू शब्दक योगसँ बनल अछि । 'महा' क अर्थ होइछ पैघ तथा 'काव्य' क अर्थ होइछ कविक कर्म, अर्थात कोनहु कविक महनीय काव्यकृति ।

विभिन्न कालक काव्यशास्त्री महाकाव्यक स्वरूप-विवेचन अपना दृष्टिकोणे प्रतिपादित कयलनि अछि । आचार्य भामह (पाँचम शताब्दी) क अनुसार महाकाव्य पैघ कथानक, महान चरित्रपर आश्रित नाटकीय पंचसंधिसँ युक्त उत्कृष्ट एवं अलंकृत शैलीमे लिखित तथा जीवनक विविध रूप तथा भावक वर्णन करयवला सर्गबद्ध काव्य होइत अछि । दण्डी ओहि काव्यकृतिकेँ महाकाव्य मानलनि अछि जकर कथानक इतिहास किंवा कथासँ उद्भूत हो, जकर नायक चतुर ओ उदात्त हो, जकर उद्देश्य चतुर्वर्ग-फलक प्राप्ति हो, जे अलंकृत, भाव एवं रससँ भरल हो तथा पैघ आकारक, सर्गबद्ध एवं पंचसन्धिसँ युक्त हो । साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ अपन पूर्ववर्ती आचार्य लोकनिक मतक समाहार कऽ महाकाव्यक लक्षण निर्धारित कयलनि । ओ सर्गक संख्या निर्धारित कऽ देलनि जे महाकाव्य आठ अथवा आठसँ बेसी सर्गक होयबाक चाही तथा नायक कुलीन क्षत्रिय वा देवता होयबाक चाही । रुद्रट अपन पूर्ववर्ती मान्यता सभकेँ आओरो विस्तृति देलनि । ओ महाकाव्यकेँ पद्यबद्ध महत्प्रबन्ध क रूपमे प्रतिष्ठापित करैत एक दिस एहिमे युग जीवनक विविध रूप, पक्ष तथा घटनाकेँ चित्रित करबाक बात बहुत विशद ओ विस्तृत रूपमे कहलनि तँ दोसर दिस कथात्मक (पौराणिक रोमानी) महाकाव्यक स्थितिकेँ सेहो स्वीकार कयलनि ।

पाश्चात्य काव्यशास्त्रीमे अरस्तूक मतानुसार महाकाव्य ओ काव्य रूप थिक जाहिमे कथात्मक अनुकरण होइत अछि, जे षट्पदी (hexameter) छन्दमे लिखल जाइत अछि, जकर कथानक दुःखान्त नाटक जकाँ अन्विति (तारतम्य) युक्त तथा आरंभसँ अंत धरि कोनहु सम्पूर्ण घटनाक वर्णन करयवाला होइत अछि ।

उपर्युक्त विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे महाकाव्यकेँ कोनहु निश्चित परिधिमे बान्हब बड़ कठिन अछि तेँ स्थूल रूपेँ कहल जा सकैछ जे *आठ अथवा बेसी सर्गक ओहन प्रबन्ध -काव्य, जाहिमे प्रायः सभ रस ओ विविध छंदक समावेश हो तथा विविध ऋतु, प्राकृतिक दृश्य एवं सामाजिक कृत्य आदिक वर्णन हो, महाकाव्य कहल जायत ।*

अन्य काव्य रूपक अपेक्षा महाकाव्यमे जीवनक समग्रताक सुसम्बद्ध चित्र अंकित करबाक शक्ति तथा व्यापक जीवन-दर्शनकेँ अभिव्यक्त करबाक क्षमता बेसी होइत छैक । वस्तुतः महाकाव्य अपन युगक सम्पूर्ण जीवन, ओकर आशा एवं ओकर संघर्षकेँ प्रतिबिम्बित करयवाला काव्य होइत अछि । जीवनक प्राणदायिनी शक्ति ओहिमे मुखरित होइत अछि तथा आबयवाला भावी पीढ़ीकेँ निरन्तर ओहिसँ प्रेरणा एवं प्रकाश भेटैत छैक ।

महाकाव्य मुख्यतः दू प्रकारक होइत अछि–पहिल साहित्यिक परम्परामे विकसित तथा दोसर लोककंठमे रहिकेँ विकसित लोक महाकाव्य (Folk epic) । अलंकृत महाकाव्यक निम्नलिखित शैली सभक उल्लेख साहित्यालोचक लोकनि द्वारा भेल अछि–शास्त्रीय, रोमानी, ऐतिहासिक, पौराणिक, रूपक कथात्मक, नाटकीय, प्रगीतात्मक, मनोवैज्ञानिक अथवा मनोविश्लेषणात्मक ।

विश्वक अन्य देशमे जतय महाकाव्यक परम्परा आधुनिक युगमे लुप्तप्राय जकाँ अछि, ततय एहि ठाम 'रामायण' ओ 'महाभारत' सँ लऽ आइ धरि महाकाव्यक परम्परा चलि आबि रहल अछि । मैथिलीमे महाकाव्यक परम्परा संस्कृत एवं प्राकृतसँ दायमे प्राप्त भेल अछि तथा समृद्ध अछि । वर्तमान कालमे घनहि एहि साहित्य रूपक रचनामे निरंतरता नहि हो मुदा एकरा गतिशीले मानल जायत ।

खंडकाव्य

जीवनक एकपक्षीय खंडचित्र प्रस्तुत करयनिहार लघु आकारक एहन कथात्मक प्रबंध काव्य जाहिमे महाकाव्यक सभ लक्षण नहि हो, खंडकाव्य कहल जाइछ ।

साहित्य-दर्पणकार कविराज विश्वनाथ एहि प्रसंग कहने छथि जे महाकाव्यहिक ढ़ंग पर जाहि काव्यक रचना होइत छैक, मुदा जाहिमे पूर्ण जीवन नहि ग्रहण कऽ खंड जीवनहिकेँ ग्रहण कयल जाइत अछि, ओकरा खंडकाव्य कहैत छी । ई खंड-जीवन एहि प्रकारेँ व्यक्त कयल जाइत छैक जाहिसँ ओ प्रस्तुत रचनाक रूपमे स्वतः पूर्ण प्रतीत होइत अछि ।

प्रतिपाद्य खाहे कोनहु चरित्र हो अथवा घटना-प्रसंग, कोनहु सामयिक इतिवृत्त हो किंवा जीवन-दर्शन सम्बन्धी यथार्थ, खंडकाव्यमे वर्णन विस्तार नहि भऽ सकैत अछि । मुदा कथा-विन्यासमे नाटकीयता, वस्तुक भाव प्रवणता तथा तीव्र अनुभूतिक व्याप्ति खंडकाव्यकेँ उत्प्रभ गरिमा प्रदान करैत अछि ।

खंडकाव्यक कथानक ऐतिहासिक, पौराणिक, कल्पित, प्रतीकात्मक आदि कोनहु प्रकारक भऽ सकैत अछि । खंडकाव्यक लेल ने तँ सर्गबद्ध होयब आवश्यक आ ने तँ विविधछन्दते । प्रायः सम्पूर्ण काव्य एकहि छंदमे रचित रहैत छैक । बीच-बीचमे गीतक प्रयोग सेहो खंडकाव्यक एक विशेषता कहल जा सकैत अछि ।

कथा ओ एकांकी जकाँ खंडकाव्य सेहो जीवनक कोनहु एक पक्ष, महत्त्वपूर्ण घटना अथवा प्रसंगविशेषक अपन सीमित आकारमे संक्षिप्त, मुदा क्रमबद्ध एवं सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करैत अछि ।

महाकाव्यक अपेक्षा स्वच्छंद होयबाक एवं कोनहु बेसी वर्जनाक परिधिमे बान्हल नहि रहबाक कारणे एहि साहित्य रूपमे रचना बेसी भेल अछि । मैथिली साहित्य सेहो एकर अपवाद नहि अछि ।

मुक्तक

'मुक्त' संज्ञामे कन् प्रत्ययक संयोगसँ व्युत्पन्न मुक्तक शब्दक अर्थ होइछ—अपना-आपमे संपूर्ण अथवा अन्य-निरपेक्ष वस्तु ।

संस्कृत काव्यशास्त्रमे 'मुक्तक' क स्वरूप-व्याख्या दू रूपमे भेल अछि । दण्डी तथा भामह मुक्तककेँ मात्र एकहि छंद अथवा श्लोकक पर्याय मानि प्रबंध-काव्यक अंग रूपमे एकर लक्षण-निरूपण कयलनि अछि । परवर्ती हेमचंद्र, विश्वनाथ आदि आचार्य एकरा पूर्वापर-प्रसंगसँ निरपेक्ष एक स्फुट एवं स्वतंत्र रचना-बंधक रूपमे प्रतिष्ठित कयलनि अछि । एहि दुनूमे दोसर व्याख्या बेसी मान्य भेल ।

वस्तुतः अपनामे पूर्ण, अन्य-निरपेक्ष एक छन्दक रचनाकेँ प्रायः सभ आचार्य 'मुक्तक' मानलनि अछि । मुदा जेँ अन्य-निरपेक्ष एकाधिक छन्दवला रचना सेहो अनिबद्ध अथवा कथाहीन होइत अछि, तेँ ओहि सभकेँ मुक्तकादि कहिकेँ प्रबन्ध-काव्य जकाँ मुक्तक काव्यकेँ एक सामान्य काव्य रूप मानि लेल गेल । एहि दृष्टिएँ प्रबन्धहीन अथवा स्फुट सभ पद्यबद्ध रचना मुक्तक काव्यक अन्तर्गत आबि जाइत अछि ।

अतः मुक्तक काव्यसँ ओहि काव्य रूपक बोध होइछ जाहिमे कथात्मक प्रबंध अथवा विषयगत बहुत दीर्घ निबंधक योजना नहि रहैत अछि । एहिमे क्षणिक अथवा अस्थिर अनुभूति अथवा भावखंडक प्रबल अभिव्यक्ति रहैत छैक । वस्तुतः *'मुक्तक' आगाँ ओ पाछाँक क्रम अथवा प्रसंगसँ तटस्थ स्वतः पूर्ण रचना-बंध अछि जे अपन संक्षिप्त आकारहि मे प्रबंधक समान रस-संचारक क्षमता रखैत अछि ।* ध्वनि-सिद्धांतक आधार पर मुक्तककेँ काव्यमे आदरणीय स्थान भेटल अछि ।

मैथिलीमे विद्यापति द्वारा प्रस्तावित ई साहित्य-रूप बेस लोकप्रिय भेल । महाकाव्य ओ खंडकाव्यक अपेक्षा एहि काव्य-रूपमे सृजन करब सहज अछि तेँ वर्तमानहु कालमे बेसी प्रचलित ओ प्रासंगिक होयब स्वाभाविक ।

उपर्युक्त साहित्य-रूप सभक विवेचनाक उपरान्त एतय आधुनिक कविताक मर्मकेँ बुझबाक लेल प्रयुक्त होमयवला किछु विशिष्ट शब्दावलीक उल्लेख करब प्रासंगिक बुझि पड़ैत अछि–

(क) बिंब

साहित्यमे बिंब-योजना आधुनिक साहित्यालोचनक बहुचर्चित विषय रहल अछि । भारतीय साहित्यमे बिंब शब्द अंग्रेजीक 'इमेज' शब्दक स्थानपर प्रयुक्त कयल जाइत अछि । 'इमेज' क सामान्य अर्थ अछि प्रतिमा, जकर सृष्टि कवि अपन मानसमे स्मृति, कल्पना, अनुभव अथवा संयुक्त रूपसँ स्मृति ओ कल्पनाक आधार पर करैत छथि । कविक मानसमे सौन्दर्यक जे बोध एक संश्लिष्टपूर्ण चित्रक रूपमे उभरैत अछि ओकरा ओ ओही रूपमे भावकक मानसमे संप्रेषित करय चाहैत छथि । काव्यमे जखन ई मानस-प्रतिमा कविक अनुभूतिक संप्रेषणक शब्दार्थमय माध्यम बनैत अछि तँ ओकरा काव्य बिंब कहल जाइत अछि ।

कहबाक अभिप्राय जे कवि अपन अनुभूतिकेँ बिंबक रूपमे मूर्त कऽकेँ शब्दार्थक माध्यमसँ काव्यबद्ध करैत छथि । साहित्यरसिक ओहि काव्य-बिंबकेँ अपन कल्पनामे साकार करैत ओहिमे निहित कविक अनुभूतिकेँ आत्मसात कऽ लैत छथि । वस्तुतः बिंब ओ मनोमूर्ति थिक जे प्रेक्षकक लेल वस्तुक सौन्दर्यकेँ प्रस्तुत करैत अछि ।

हिन्दीक एक गोट समीक्षकक उक्तिक भाव द्रष्टव्य अछि जे काव्य बिंब कविक स्मृतिजन्य अथवा कल्पना-सृष्ट, संवेदनशील अन्तररससँ सिक्त एहन शब्दचित्र होइत अछि

जे सहृदय साहित्यरसिकक अंतस्मे विविध इन्द्रियग्राह्य संवेदनाकेँ रूपायित कऽ व्यक्त होइत अछि तथा अपन संश्लिष्टता, रसनीयता तथा इन्द्रिय-रंजकतासँ काव्यार्थकेँ प्रभावोत्पादक एवं संप्रेषणीय बनबैत अछि ।

काव्यमे भावाभिव्यक्तिक समर्थ माध्यमक रूपमे काव्य-बिंबक अनुपेक्षणीय महत्त्व अछि । वस्तुत: बिंब काव्यक ओ तत्त्व अछि जाहिसँ काव्यमे जीवंतता अबैत अछि । कवि अपन रूप विधायिनी प्रतिभासँ काव्य-बिंबक सृष्टि करैत छथि तथा काव्यक भावक अपन रूपग्राहिणी दृष्टिसँ काव्यमे अभिव्यक्त सौन्दर्य चित्रक साक्षात्कार करैत अछि । वस्तुत: संश्लिष्ट योजनासँ एक पूर्ण बिंबक विधान कविक प्रतिभाक परिचायक मानल जाइत अछि ।

काव्य-बिंबक स्वरूप, महत्त्व आदिक चर्च निश्चये पाश्चात्य साहित्यक अवदान थिक मुदा भारतीय साहित्यशास्त्रमे सेहो बिंब-विधानक महत्त्वकेँ प्रकारान्तरसँ स्वीकार कयल जाइत रहल अछि ।

(ख) प्रतीक

प्रतीक अंग्रेजीक 'सिम्बल' क पर्याय थिक । एहि शब्दक प्रयोग ओहन दृश्य, वस्तु वा तथ्यक लेल कयल जाइछ जे कोनहु अदृश्य वस्तु किंवा तथ्यक प्राय: अनुरूप होयबाक कारणे ओकर प्रतिनिधि अथवा प्रतिरूपक रूपमे मानि लेल जाय । दोसर शब्दमे कहल जा सकैछ जे कोनहु अन्य स्तरक समानुरूप वस्तु द्वारा कोनहु अन्य स्तरक विषयक प्रतिनिधित्व करयवला वस्तु प्रतीक थिक ।

प्रतीकक प्रयोग आरंभहिसँ जीवन, दर्शन, धर्म, कला एवं वाङ्मयमे होइत रहल अछि । वस्तुत: मनुष्य मूलत: प्रतीकक माध्यमहि सँ सोचैत अछि, अमूर्त चिन्तन बेसी विकसित स्तरक लक्षण थिक । किछु प्रतीक सार्वभौम जकाँ भऽ जाइत छैक, जेना वीरताक लेल सिंह, चतुरताक लेल लोमड़ी, पवित्रता ओ स्वच्छताक लेल श्वेत रंग तथा कायरताक लेल गीदड़ आदि । देशकालक सीमामे सांस्कृतिक प्रतीक सेहो बहुत पैघ स्तर पर प्रयुक्त होइत रहैत अछि, जेना राष्ट्रीय चिह्न, फूल, पशु आदिक रूपमे ।

प्रतीक दू प्रकारक मानल गेल अछि- परंपरित एवं वैयक्तिक । परम्परित प्रतीक बहुप्रयुक्त होयबाक कारणे पाठकक लेल बोधगम्य तथा कविक लेल वस्तुनिष्ठ होइत अछि । वैयक्तिक प्रतीकक विधान कवि विशिष्ट भावबोधक व्यंजनाक लेल करैत छथि जाहिसँ

काव्यमे नूतनता तथा वैचित्र्यक समावेश तँ होइत अछि मुदा ओ कखनहु-कखनहु बहुत गूढ़ सेहो भऽ जाइत छैक ।

(ग) कल्पना

पूर्व अनुभूतिक पुनर्योजनासँ अपूर्वक अनुभूति उत्पन्न करबाक क्रिया अथवा शक्तिकेँ कल्पना कहल जाइछ । क्षीर-सागर,, दशमुख, स्वर्ण-मृग आदि अननुभूत पदार्थ कल्पना द्वारा अनुभव-गम्य होइत अछि ।

कल्पना अंग्रेजीक 'इमेजिनेशन' शब्दक पर्याय थिक । 'इमेजक अर्थ अछि चित्र अथवा छवि । आधुनिक साहित्यालोचनमे एकरा लेल 'बिंब' शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि । अत: काव्यक संदर्भमे कल्पनाक अर्थ भेल बिंब-सृष्टि अथवा रूप-सृष्टि करबामे समर्थ कविक मौलिक उद्‌भावना-शक्ति ।

कल्पना नूतन उद्‌भावना तँ करितहि अछि, एकर अन्य कार्य अछि अमूर्तकेँ मूर्त एवं निर्जीवकेँ सजीव बनायब, पूर्व-परिचित विषयक नव-संस्कार तथा प्रचलित उपकरणक नवीन प्रयोग । काव्य-सृजनक संदर्भमे कल्पना-शक्ति कविकेँ अभिव्यंजना-वक्रता, मनोहरता, कौशल तथा अप्रस्तुत विधानक सामर्थ्य प्रदान करैत अछि । काव्य-भाषाक विशिष्ट एवं सटीक प्रयोग सेहो कविक उर्वर कल्पनाक परिणाम होइत अछि । काव्यास्वादनक लेल साहित्य रसिकमे सेहो कल्पना शक्तिक होयब आवश्यक अछि कारण एकरा बिना ओ काव्यमे निहित सूक्ष्म अर्थ-व्यंजना तथा वक्रताकेँ ग्रहण नहि कऽ सकैछ । एहि प्रकार कल्पनाक कर्म-क्षेत्रक प्रसार काव्य-सृजनसँ लऽ काव्यास्वादन धरि अछि ।

भारतीय काव्यशास्त्रमे कल्पनाकेँ प्रतिभाक गुण मानल गेल अछि । प्रतिभाकेँ अपूर्व वस्तुक निर्माण करयबला प्रज्ञा अथवा 'नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा' कहल गेल अछि जे पाश्चात्य साहित्यालोचन प्रतिपादित 'सृजनात्मक कल्पना' (क्रिएटिव इमेजिनेशन) तथा 'उद्‌भावना शक्ति' (इन्वेंटिव फैकल्टी)क समकक्ष अछि ।

(घ) यथार्थ

'यथार्थक' शाब्दिक अर्थ होइछ-'सत्य', 'उचित' ,'जेहन अछि तेहन' आदि ।

ओना तँ साहित्यकेँ आरम्भहिसँ सामाजिक जीवनक दर्पण कहल जाइत रहल अछि

मुदा मध्यकालीन रचनाकार लोकनिक द्वारा जीवन यथार्थक ओतेक व्यापक आ अपेक्षित स्वरूप नहि चित्रित भऽ सकल । ओ लोकनि आदर्शमयता, संरक्षक लोकनिक यशोगान, अतिरंजित कथ्य, कल्पित ओ असंभाव्य घटना-विन्यास, शिल्पगत गूढ़ता आदिमे ओझरायल रहि गेलाह । एम्हर फ्रांसीसी क्रांतिक पश्चात् जे सामाजिक ओ बौद्धिक परिवर्तन आयल ताहि दृष्टिकोणे साहित्यक पूर्व प्रचलित सामान्य प्रवृत्ति ओतबा प्रासंगिक नहि रहि पाओल । फलतः साहित्यक वर्ण्य-परिधि जीवन एवं जगत्क यथातथ्य रूपांकनक आग्रहसँ ओत-प्रोत भऽ गेल । फलस्वरूप साहित्यमे एक नव वादक आविर्भाव भेल यथार्थवादक नामे ।

साहित्यक एहि विशिष्ट चिन्तन-पद्धतिक अनुसार रचनाकारकेँ अपन कृतिमे जीवनक ओहने स्वरूपक चित्रण करबाक चाही जेहन गुण-दोषमय एहि संसारमे जाहि रूपमे जे वस्तु दृष्टिगोचर होइक, आदर्शवादक पुट ओहिमे नहि देल जाइक ।

आधुनिक साहित्यकमे यथार्थवादक विकास प्रगतिवादक माध्यमे भेल । कविता, लघुकथा, उपन्यास, नाटक आदि सभ रूपमे आधुनिक जीवनक जटिल संघर्ष, व्यंग्य-विद्रूप, अन्तर्द्वन्द्व तथा कुरूपताक अंकन भेल । जीवनक तुच्छसँ तुच्छ परिस्थितिकेँ सेहो साहित्यमे चित्रित करबाक योग्य बूझल जाय लागल ।

मार्क्स एवं फ्रायड अपना-अपना ढंगसँ यथार्थवादक विकासमे सहयोग कयल । मार्क्स जतय सामाजिक जीवनक कटु यथार्थक दिस संकेत कयल ततय फ्रायड वैयक्तिक जीवनक गर्हित कुंठाक दिस ध्यानाकृष्ट कराओल । सच कहल जाय तँ प्रयोगवादकेँ सेहो यथार्थवादहिसँ प्रेरणा भेटल । द्वितीय विश्वयुद्ध यथार्थवादकेँ साहित्यमे आओरो बेसी ग्राह्य बना देलक ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. साहित्य ककरा कहल जाइछ ?
2. गद्यक अन्तर्गत परिगणित साहित्य-रूप सभक नाम लिखू ।
3. पद्यात्मक साहित्य-रूप सभक उल्लेख करू ।
4. निम्नलिखित साहित्य-रूपक परिभाषा लिखू :

   (क) नाटक, (ख) लघुकथा, (ग) उपन्यास, (घ) निबन्ध, (ङ) आलोचना, (च) जीवनी, (छ) संस्मरण तथा (ज) महाकाव्य ।
5. निम्नलिखित साहित्य-रूपमे अन्तर स्पष्ट करू :

   (क) नाटक ओ एकांकी

   (ख) लघुकथा ओ उपन्यास

   (ग) महाकाव्य ओ खंडकाव्य

   (घ) खंडकाव्य ओ मुक्तक

   (ङ) कल्पना ओ यथार्थ
6. निम्नलिखित शब्दावलीक विषयमे दू-दू वाक्य लिखू :

   (क) बिम्ब (ख) कल्पना (ग) यथार्थ (घ) प्रतीक ।